नाट्यदर्पण पर अभिनवभारती का प्रभाव

काजी अन्जुम सैफ़ी

आचार्य अभिनवगुप्त के अतुलनोय ज्ञान एवं अद्वितीय मेधा की प्रतीक अभिनवभारती स्वयं टोका होते हुए भी प्रकाण्ड पाण्डित्यपूर्ण विवेचन के कारण स्वतन्त्र नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। निःसन्देह रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने नाट्यदर्पण की रचना से पूर्व उसका सम्यक् आलोडन किया है। इसी कारण उसकी विवेचन-पद्धति, तथ्यों, मन्तव्यों और विचारों का अत्यधिक प्रभाव नाट्यदर्पण पर परिलक्षित होता है।

यह एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि सम्पूर्ण नाट्यदर्पण में कहीं भी अभिनवभारती का नाम प्राप्त नहीं होता है। 'नाटक' शब्द की व्युत्पत्ति के प्रसङ्ग में मात्र एक स्थल पर आचार्य अभिनव गुप्त की नामतः आलोचना प्राप्त होती है[1]। इससे इस तथ्य की भो प्रतोति होती है कि रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने स्वग्रन्थलेखन में स्वतन्त्र ग्रन्थ-लेखन की परम्परा का निर्वाह किया है, किसी का अन्धानुकरण नहीं किया। इसलिये अनेक स्थलों पर उन्होंने तथ्यों को नवीन रूप में परिभाषित और प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। ऐसे अवसरों पर सामान्यरूपेण प्राचीन परम्परा और स्वयं से भिन्न मत रखने वाले आचार्यों के विचारों का भी उन्होंने निर्देश किया है। इसके लिये उन्होंने 'केचिद्' आदि शब्दों का प्रयोग किया है। इसी शैली में कतिपय ऐसे मन्तव्यों का भी रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने सङ्केत किया है, जो अभिनवभारती में भी प्रस्तुत किये गये हैं। नाट्य-दर्पण में ऐसे उद्धरण निम्नलिखित हैं—

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
१. अन्ये तु कार्यार्थमसह्यस्याप्यर्थस्य सहनं छादनमामनन्ति। विवृत्ति पृ० ८४	...... तेन दुष्टोऽप्यर्थोऽपमानेन बहुमतीकृतः। तदपमानकलङ्कापवारणाच्छादनमिति। ना० शा० भाग–३ पृ० ५५-५६।
२. अपरे तु क्रोधादेः प्राप्तस्य शमनं द्युतिमामनन्ति। पूर्वोक्त पृ० १०९	सामर्थ्यात्प्रशमनोयस्य क्रोधादेरर्थस्य प्राप्तस्यापि यत्प्रशमनं सा द्युतिः। पूर्वोक्त पृ० ५८।
३. केचिदस्य द्वादशनेतृकत्वमाम्नासिषुः। पूर्वोक्त पृ० १०९	यथा समवकार इति द्वादशेत्यर्थः। पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ४४४।
४. केचित् पुनरल्पाक्षरं गायत्र्यादिकमर्धसम-विषमादिकं चात्र पद्यं मन्यन्ते। पूर्वोक्त पृ० १११	उष्णिक् सप्तभिः गायत्री षड्भिः बन्धकुटिलानि विषमार्धसमानि तान्यत्र समवकारे सम्यग्योज्यानीति। पूर्वोक्त पृ० ४४१।

---

१. विवृति ना० द० पृ० २५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने नाट्यदर्पण में अन्य आचार्यों के मतों को विपुल सङ्ख्या में प्रदर्शित किया है। अभिनवभारती में भी इसी रूप में विविध विचारधाराओं का उल्लेख प्राप्त होता है। नाट्यदर्पण में प्रदर्शित अनेक मत ऐसे हैं जो अभिनवभारती में भी प्राप्त होते हैं। वस्तुतः रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने अपने ग्रन्थ में प्रदर्शित विभिन्न मत-मतान्तरों का पर्याप्त अंश अभिनवभारती से प्राप्त किया है। इनमें से कुछ मत अभिनवभारती के पाठ-भेद के रूप में भी प्राप्त होते हैं। नाट्यदर्पण में उल्लिखित ऐसे मतों का जो अभिनवभारती में भी निर्दिष्ट हैं—हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं—

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
१. केचित् तु मुखादयः सन्धयोऽवस्थाश्च यत्र पृथक्-पृथक् सङ्क्षेपतः पुनरुल्लिङ्ग्यन्ते, तं निर्वहणसन्धिमाहुः। विवृत्ति पृ० ५१	अत्र केचिमून् सर्वान् सन्धीनवस्थापञ्चकनिर्वहणे पृथग्वृत्त्या योज्यमानानिच्छन्ति। ना० शा० भाग-३ पृ० २९।
२. अन्ये तु विपदां शमनं करणमाहुः। पूर्वोक्त पृ० ५६	अन्ये तु विपदां शमनं करणमाहुः। पूर्वोक्त पृ० ४१।
३. अन्ये तु वर्णानां ब्राह्मणादीनां यथासम्भवं द्वयोस्त्रयाणां चतुर्णां वैकत्र मीलनं वर्णसंहारमाचक्षते। पूर्वोक्त पृ० ६५	यत्तु ब्राह्मणादिवर्णचतुष्टयमेलनमिति तदफलत्वादनादृत्यमेव। पूर्वोक्त पृ० ४७।
४. अन्ये तु 'चित्रार्थं रूपकं वचः' इति पठन्ति। पूर्वोक्त पृ० ७४	अन्ये तु चित्रार्थमेव वचो रूपकमिति मन्यन्ते। पूर्वोक्त पृ० ४८।
५. अन्ये त्वस्य स्थाने युक्तिं पठन्ति। पूर्वोक्त पृ. ९०	युक्तिरित्यन्ये इदमङ्गं व्यवहरन्ति। पूर्वोक्त पृ० ५६
६. केचिदन्यतमाङ्गानङ्गीकारेण द्वादशाङ्गमेवैतं सन्धिमिच्छन्ति, एवं गर्भसन्धिमपीति। पूर्वोक्त पृ० ९१	केचिदत्रान्यतममङ्गं नाधीयते, द्वादशाङ्गमेवैतत्सन्धिमाहुः। पूर्वोक्त पृ० ५६।
७. अन्ये तु—'स्वभाव शुद्ध-पाखण्ड्यादेश्चरितं प्रहस्यते, तत् सङ्कीर्णचरितविषयत्वात् सङ्कीर्णम्' इत्याहुः। पूर्वोक्त पृ० ११३	अन्ये त्वाहुः—येषां स्वभावत एव चरितं शिष्टमध्ये सभ्येतरतमत्वेन प्रहसानर्हं तदविशुद्धत्वात् सङ्कीर्णम्, तद्योगाच्च रूपकम्। पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ४४८।
८. सङ्कीर्णमनेकाङ्कं केचिदनुस्मरन्ति। पूर्वोक्त पृ० ११३	प्रहसनस्याङ्कनियमानभिधानात् . शुद्धमेकाङ्कं सङ्कीर्णं त्वनेकाङ्कं वेश्यादिचरितसङ्ख्याबलादिति केचित्। पूर्वोक्त पृ० ४४९।

रामचन्द्र-गुणचन्द्र की शैली की एक प्रमुख विशेषता यह भी है कि उन्होंने विषयों को परिभाषित कर उनके स्पष्टीकरण के लिये एक अथवा अधिक उदाहरण तत्सम्बद्ध विविध ग्रन्थों से प्रस्तुत किये हैं। निश्चितरूपेण शुष्क शास्त्रीय नियमों के व्यावहारिक प्रदर्शन से विषय-बोधन में पर्याप्त सहायता प्राप्त होती है। यहाँ भी उन्होंने अभिनवभारती की सामग्री का लाभ उठाया है, क्योंकि आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा प्रदर्शित उदाहरणों को उन्होंने तत्-तत् प्रसङ्गों में अनेकशः स्वीकार कर नाट्यदर्पण में अनेक स्थलों पर प्रदर्शित किया है। अभिनवभारती पर आधारित नाट्यदर्पण के निम्न उदाहरणों को प्रस्तुत किया जा सकता है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय	नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
१. नाटक में दिव्य पात्र	पृ० २५	ना० शा० भाग-२ पृ० ४४१
२. वृत्तबन्धशिक्षा	,, ३०	,, पृ० ४२९
३. पताकास्थानक	,, ४०-४१	,, भाग-३ पृ० २०-२१
४. फलागम	,, ४७	,, पृ० ८
५. देवायत्त फल में पुरुष व्यापार की गौणता से सम्बद्ध शङ्का।	,, ४७	,, ,, ५८
६. मुखसन्धि	,, ४८	,, ,, २४
७. प्रतिमुखसन्धि	,, ४९	,, ,, २४-२५
८. निर्वहण सन्धि	,, ५१	,, ,, २९
९. परिकर सन्ध्यङ्ग	,, ५३	,, ,, ३८
१०. परिन्यास	,, ५३	,, ,, ३८
११. समाहिति	,, ५४	,, ,, ४०
१२. उद्भेद	,, ५५	,, ,, ४१
१३. करण	,, ५६	,, ,, ४१
१४. विलोभन	,, ५६	,, ,, ३८
१५. भेद	,, ५७	,, ,, ४२
१६. प्रापण	,, ५७	,, ,, ३९
१७. विलास	,, ६१	,, ,, ४२
१८. वर्ण संहृति	,, ६४	,, ,, ४७
१९. नर्म	,, ६५	,, ,, ४४
२०. नर्मद्युति	,, ६७	,, ,, ४४
२१. सङ्ग्रह	,, ७२	,, ,, ४९
२२. उदाहृति	,, ७५	,, ,, ४८
२३. क्रम	,, ७६	,, ,, ४९
२४. शङ्का	,, ७७	,, ,, ५२
२५. आक्षेप	,, ७८	,, ,, ५०
२६. अधिबल	,, ७९	,, ,, ५१
२७. द्रव	,, ८२	,, ,, ५३
२८. छादन	,, ८४	,, भाग-३ पृ० ५६
२९. शक्ति	,, ८८	,, पृ० ५३
३०. व्यवसाय	,, ९१	,, ,, ५४
३१. सन्धि	,, ९२	,, भाग-३ पृ० ५७
३२. आनन्द	,, ९६	,, पृ० ५८
३३. विनय रहित वेश्या नायिका से युक्त प्रकरण	,, १०४	,, भाग-२ पृ० ४३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय	नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
३४. वीथी	पृ० ११७	ना० शा० पृ० ४५९
३५. व्याहार	,, ११९	,, ,, ४५८
३६. त्रिगत	,, १२६	,, ,, ४५८
३७. असत्प्रलाप	,, १२७	,, ,, ४५६
३८. वाक्केली	,, १२८	,, ,, ४५६
३९. नालिका	,, १२९	,, ,, ४५५
४०. उद्घात्यक	,, १३२	,, ,, ४५४
४१. अवस्पन्दित	,, १३३	,, ,, ४५५
४२. आमुख	,, १३६	,, भाग-३ पृ० ९३
४३. आरभटी वृत्ति में विचित्र नेपथ्य एवं माया-शिर-दर्शन।	,, १४०	,, पृ० १०४
४४. आरभटी वृत्ति में विचित्र भाव कार्यान्तर।	,, १४१	,, ,, १०४
४५. आक्षेपिकी ध्रुवा	,, १७३	,, भाग-४ पृ० ३६०

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अभिनवभारती में प्रदर्शित उदाहरणों की विपुल सङ्ख्या का नाट्यदर्पण में उदारतापूर्वक प्रयोग किया गया है। अतः इस दृष्टि से भी रामचन्द्र गुणचन्द्र अभिनवगुप्त के ऋणी हैं।

तथ्यों के तार्किक विवेचन की दृष्टि से नाट्यदर्पण में यत्र-तत्र विविध शब्दों की व्युत्पत्तिपरक व्याख्या प्रस्तुत की गयी है। इस क्षेत्र में भी उस पर अभिनवभारती का स्पष्ट भाव परिलक्षित होता है। नाट्यदर्पण में अनेक ऐसी निरुक्तियाँ हैं, जिनका अभिनवभारती से पूर्ण साम्य है। दोनों ग्रन्थों में समान रूप में निर्दिष्ट ऐसे स्थल निम्नलिखित हैं—

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
१. नाटकमिति नाटयति विचित्रं रञ्जनाप्रवेशेन सभ्यानां हृदयं नर्तयतीति नाटकम्। विवृत्ति पृ० २५	···तथा हृदयानुप्रवेशरञ्जनोल्लासनया हृदयं शरीरं चोपायव्युत्पत्तिपरिघट्टितया चेष्टया नर्तयति ····नाटकमिति। ना० शा० भाग-२ पृ० ४१३
२. स प्रसिद्धि प्राशस्त्य हेतुत्वात् पताकेव पताका। पूर्वोक्त पृ० ३९	···प्रसिद्धिप्राशस्त्ये सम्पादयति।···पताकावदुपयोगित्वादियं पताकेति चिरन्तनाः। पूर्वोक्त भाग-३ पृ० १५
३. अर्थः कर्म–करणव्युत्पत्त्या प्रयोजनमुपायश्च। पूर्वोक्त पृ० ३९	····अर्थः प्रयोजनमुपायश्च, कर्म-करणव्युत्पत्त्या। पूर्वोक्त पृ० १८-१९
४. ··· प्रकर्षेण स्वार्थानपेक्षया करोतीति प्रकरी। विवृत्ति पृ० ४१।	प्रकर्षेण स्वार्थानपेक्षया करोतीति। ना० शा० भाग—३ पृ० १५।
५. स मुखस्याभिमुख्येन वर्तत इति प्रतिमुखम्। पूर्वोक्त पृ० ४८।	प्रतिमुखं प्रतिराभिमुख्येन यतोऽत्र वृत्तिः। पूर्वोक्त पृ० २५।

१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
६. नर्मणो द्योतनं नर्मद्युतिः। पूर्वोक्त पृ० ६७	नर्म च सुतरां द्योतितं भवतीति नर्मद्युतिः। पूर्वोक्त पृ० ४४।
७. स उत्कर्ष हरणादुदाहृतिः। पूर्वोक्त पृ० ७५	उत्कर्षमाहरतीत्युदाहरणम्। पूर्वोक्त पृ० ४८।
८. बुद्धिस्तत्र क्रमते, न प्रतिहन्यत इत्यर्थः। पूर्वोक्त पृ० ७६	बुद्धिर्हि तत्र क्रमते न प्रतिहन्यते। पूर्वोक्त पृ० ४९
९. सा द्रवति श्लथीभवति हृदयमनयेति द्रवः। पूर्वोक्त पृ० ७७	विद्रवति विलीयते हृदयं येनेति। पूर्वोक्त पृ० ५२।
१०. तोटयति भिनत्ति हृदयमिति तोटकम्। पूर्वोक्त पृ० ८१	भिनत्ति यतो हृदयं ततस्तोटकम्। पूर्वोक्त पृ० ५१
११. मार्गाच्चलनम् (द्रवः) पृ० ८२	....द्रवणं चलनं मार्गादिति द्रवः। पूर्वोक्त पृ० ३३
१२. प्रकर्षेण रोच्यते....इति प्ररोचना। पृ० ९०	प्रकर्षेण रोचत इति प्ररोचना। पूर्वोक्त पृ० ५६
१३ आनन्दहेतुत्वादानन्दः। पृ० ९६।	तदानन्त(नन्द)हेतुत्वादानन्दः। पूर्वोक्त पृ० ५८
१४. डिमो डिम्बो विप्लव इत्यर्थः, तद्योगादयं डिमः। पृ० ११४	डिमो डिम्बो विद्रव इति पर्यायाः, तद्योगादयं डिमः। पूर्वोक्त भाग—२ पृ० ४४३
१५. उत्क्रमणोन्मुखा सृष्टिर्जीवितं यासां ता उत्सृष्टिकाः शोचन्त्यः स्त्रियस्ताभिरङ्कितत्वादुत्सृष्टिकाङ्कः। पृ० ११५	उत्क्रमणीया सृष्टिर्जीवितं प्राणा यासां ता उत्सृष्टिकाः शोचन्त्यः स्त्रियस्ताभिरङ्कित इति तथोक्तः। पूर्वोक्त पृ० ४४६
१६. ईहा चेष्टा मृगस्येव स्त्रीमात्रार्थात्रेतीहामृगः। पृ० ११६	ईहा चेष्टा मृगस्येव स्त्रीमात्रार्था यत्र स ईहामृगः। पूर्वोक्त पृ० ४४२
१७. विविधोऽर्थ आह्रियतेऽनयेति व्याहारः। पृ० ११७	व्याहारः विविधोऽर्थोऽभिनीयते येन। पूर्वोक्त पृ० ४५८
१८. तदधिकबलसम्बन्धादधिबलम्। पृ० ११९	अधिबलसम्बन्धादधिबलम्। पूर्वोक्त पृ० ४५७
१९. वचनं तद् दुष्टार्थगर्भत्वाद् दुष्टशोणितगर्भगण्ड इव गण्डः। पृ० १२१	तद्वचनं दृष्टार्थगर्भत्वात्गण्ड इव गण्डः। पूर्वोक्त पृ० ४५८
२०. त्रिगतमनेकार्थगतम्। पृ० १२४	अनेकमर्थं गतमिति त्रिगतम्। पूर्वोक्त पृ० ४५८
२१. नाली व्याजरूपा प्रणालिका। पृ० १२९	नालिका प्रणालिका व्याजेत्यर्थः। पूर्वोक्त पृ०४५५
२२. मृदा परपक्षमर्दनेन स्वपक्षमवति रक्षतीति मृदवम्। पृ० १२९	मृदवमिति मर्दनं मृत्परपक्षमर्दनेन स्वपक्षभवति रक्षतीति। पूर्वोक्त पृ० ४५७
२३. उद्घाते प्रश्नात्मके साधूद्घात्यम्। पृ० १३१	प्रश्नात्मके उद्घाते साध्विति यत्। ना० शा० भाग—२, पृ० ४५४
२४. अन्य कार्यावलगनादवलगितम्। पृ० १३२	अन्यकार्यावलगनादवलगितम्। पूर्वोक्त पृ० ४५४
२५. अवस्पन्दितं चक्षुःस्पन्दनादिवदन्तर्गतसूचनीयसम्भवात्। पृ० १३३	अवस्पन्दितं चक्षुःस्पन्दनादिवदन्तर्गतसूचनीयसम्भवात्। पूर्वोक्त पृ० ४५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
२६. 'आङ्मर्यादायाम्' तेन मुखसन्धि सम्प्राप्य निवर्तते । पृ० १३६	मुखसन्धेर्निवर्तते यतः आङ्मर्यादायाम् । ना० शा० भाग—३ पृ० ९३
२७. प्रसादप्रयोजना प्रासादिकी । पृ० १७३	प्रसादयोजनः । प्रासादिकीं विधात् । पूर्वोक्त भाग—४ पृ० ३६
२८. विशेषेण दूषयन्ति विनाशयन्नि···विस्मारयन्तीति विदूषकाः । पृ० १७८	दूषयतीति विदूषकः····दूषयन्ति विस्मारयन्ति । पूर्वोक्त भाग—३ पृ० २५१-२५२

रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने 'नाट्यदर्पण' में 'वेणीसंहार' की आलोचना करते हुए भानुमती के साथ दुर्योधन के रत्यभिलाष रूप विलास को तत्कालीन परिवेश में असङ्गत होने के कारण अनुचित कहा है।[1] इसी रूप में 'वेणीसंहार' की यह आलोचना आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा भी की गयी है।[2] रामचन्द्र-गुणचन्द्र के अनुसार 'पुष्पदूषितक' में अशोकदत्त के कथन से नन्दयन्ती के चरित्र के सम्बन्ध में प्रदर्शित व्यलीक सम्भावना निर्वहण सन्धि पर्यन्त उपयोगी होने के कारण दोषपूर्ण नहीं है। निर्वासन के पश्चात् उस जैसी उत्तम प्रकृति की नायिका का अधम प्रकृति वाले शबर सेनापति के घर में निवास अवश्य ही दोषपूर्ण एवं अनुचित है।[3] इन्हीं तथ्यों के आधार पर 'अभिनवभारती' में भी 'पुष्पदूषितक' की आलोचना एवं समर्थन किया गया है।[4]

नाट्यदर्पण की विवृत्ति पर भी अभिनवभारती का अत्यधिक प्रभाव है। रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने स्वरचित विवृत्ति में विपुल मात्रा में अभिनव भारतीय के अंशों का समाहार किया है। कहीं उसके भावों, कहीं शब्दों, कहीं वाक्यों और कहीं-कहीं तो सम्पूर्ण अनुच्छेद को ही यथावत् अथवा यत्किञ्चित् परिवर्तन सहित नाट्यदर्पण में ग्रहण कर लिया गया है। नाट्यदर्पण के अभिनवभारती से प्रभावित अंशों को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं—

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
१. यद्यपि समवकारे शृङ्गारत्वमस्ति, तथापि न तत्र कैशिकी। न खलु काममात्रं शृङ्गारः, किन्तु विलासोत्कर्षः, न चासौ रौद्रप्रकृतीनां नेतृणाम्। पृ० २४	नन्वेवं शृङ्गारयोगे काव्ये कैशिकीहीनता।····न कामसद्भावमात्रादेव कैशिकी सम्भवः, रौद्र प्रकृतीनां तद्भावात्। विलासप्रधानं यद्रूपं सा कैशिकी···· । ना० शा० भाग–२, पृ० ४४०-४४१.
२. इह ख्यातत्वं त्रिधा नाम्ना चेष्टितेन देशेन च। पृ० २४	····इह त्रिविधया प्रसिद्धया प्रसिद्धत्वं भवति, अमुक एवंकारी अमुत्रदेश इति। पूर्वोक्त पृ० ४११
३. नायिका तु दिव्याऽपि भवति यथोर्वशी, प्रधाने मर्त्यचरिते तच्चरितान्तर्भावात्। पृ० २५	नायिका तु दिव्याप्यविरोधिनी यथोर्वशीनायकचरितेनैव तद्वृत्तस्याक्षेपात्। पूर्वोक्त पृ० ४१२

---

१. ना० द० पृ० ६२।

२. अभि० भा० (ना० शा० भाग–३) पृ० ४२।

३. विवृत्ति ना० द० पृ० १०३।

४. अभि० भा० (ना० शा० भाग–२) पृ० ४३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाट्यदर्पण	अभिनवभारती
४. अत्यन्तभक्तानामेवं नाम देवताः प्रसीदन्तीति देवताऽऽराधनपुरःसरमुपायानुष्ठानमाधेयमिति । पृ० २५	निरन्तर भक्ति भावितानामेवन्नामदेवताः प्रसीदन्ति, तस्माद् देवताराधनपुरस्सरमुपायानुष्ठानं कार्यमिति । पूर्वोक्त पृ० ४१२
५. इह तावत् न निसर्गतः किञ्चित् चरितं मुख्यमङ्गं वा, किन्तु बहुष्वपि फलेषु कविर्यस्यात्यन्तमुत्कर्षमभिप्रैति तत्फलमिष्टम् ।''''रामप्रबन्धेषु हि सुग्रीवमैत्रीशरणागतविभीषणरक्षण''''''सीताप्रत्यानयनादिषु सीताप्रत्यानयनस्यैव प्राधान्यं कविना प्रतिपादितम् । पृ० २७	''''न निसर्गतः किञ्चिदाधिकारिकम् । पूर्वोक्त भाग–३ पृ० २;''''जगत्कण्टकरावणोद्धरणं शरणागतविभीषणरक्षणमित्याद्यपि हि प्रधानफले सीताप्रत्यानयनलक्षणे विवक्षिते न शक्त्यन्तरव्यापारसाध्यम्'''' । पूर्वोक्त पृ० ३;''''कविर्यत्फलमुत्कर्षेण विवक्षिते तत्प्रधानफलम् । पूर्वोक्त पृ० ४
६. प्रयत्नान्तरे हि तदपि मुख्यं स्यात् तापसवत्सराजे हि वत्सराजस्य मुख्याय कौशाम्बीराज्यलाभाय प्रवृत्तेनैव यौगन्धरायण-व्यापारेण प्रासङ्गिकं वासवदत्तासङ्गमपद्मावती प्राप्त्यादिकर्मापि साध्यते । पृ० २७	शक्त्यन्तरेऽपिपृथक् व्यापार्यमाणे तस्याप्याधिकारिकत्वमेव स्यात् ।''''तापसवत्सराजे राज्यप्रत्यापत्तेः प्रधानफलत्वे वासवदत्तासङ्गमपद्मावती प्राप्त्यादौ क्रियान्तरानुपयोग एव मन्तव्यः । पूर्वोक्त पृ० ३
७. उपायस्वरूपापरिज्ञाने तद्विषयाणामारम्भादीनाम्''''नैषामौद्देशिको निबन्धक्रमः''''फलस्य मुख्यसाध्यस्य हेतव उपायाः । इह हेतुर्द्विधा अचेतनः'''' चेतनोऽपि द्विधा मुख्य उपकरणभूतश्च । उपकरणभूतो द्विधा स्वार्थसिद्धियुतः परार्थसिद्धिपरः । परार्थसिद्धिपरश्च पूर्वः पताका, अन्यः प्रकरीति । पृ० ३७	तदनभिधाने उपायादिस्वरूपापरिज्ञानात् प्रारम्भाद्यवस्थानाम्''''यत्रार्थः फलं तस्य प्रकृतय उपाया फलहेतवः इत्यर्थः । तत्र जडचेतनतया द्विधाकरणम्.... । चेतनोऽपि द्विधा मुख्य उपकरणभूतश्च, अन्त्योऽपि द्विधा स्वार्थसिद्धिसहिततया परार्थसिद्ध्या युक्तः शुद्ध्यापि च, तत्राद्यो बिन्दुः द्वितीयः पताका तृतीयः प्रकरी ।''''तासामौद्देशिकोक्तिवदुपनिबन्धक्रमनियम इत्यर्थः । पूर्वोक्त पृ० १२
८. गोपुच्छस्य च केशाः केचित्स्तोकमात्रयायिनः, केचिन्मध्यावधयः, केचिदंतव्यापिनः, एवं प्रबन्धवस्तून्यपि । यथा रत्नावल्यां प्रमोदोत्सवो मुखसन्धावेव निष्ठितः, मुखोपक्षिप्तो बाभ्रव्यादिवृत्तान्तश्च निर्वहणारम्भे रत्नावलीप्राप्त्यादयश्च साररूपाः पदार्था अन्त इति । पृ० ३०	अन्ये तु यदा गोपुच्छे केचिद्वालाः ह्रस्वाः, केचिद्दीर्घाः ।''''तद् यथारत्नावल्यां प्रमोदोत्सवो मुखसन्धावेव निष्ठित इत्यादि यावत् बाभ्रव्यवृत्तान्तो मुखोपक्षिप्तो निर्वहणनिष्ठां प्राप्तः । साररूपाश्च पदार्थाः पर्यन्ते कर्तव्याः । पूर्वोक्त भाग–२ पृ० ४२८-४२९
९. इत्यादि नायक-प्रतिनायकामात्याद्याश्रयेण विचित्ररूपो बीजोपन्यास । पृ० ३९	तत्रापि कचिन्नायकोद्देशेन कचित्प्रतिनायकाश्रयेणेत्यादिभेदैर्बहुधा भिद्यते । पूर्वोक्त भाग–३ पृ० १३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. ....परस्य प्रधानस्य प्रयोजनं सम्पादयति ....। सुग्रीव विभीषणादिर्हि रामादिनोपक्रियमाणो रामादेरात्मनश्चोपकाराय भवन् रामादेः प्रसिद्धिं प्राशस्त्यं च सम्पादयति। पृ० ३९

....परस्य प्रयोजनसंपत्तये भवदपि स्वप्रयोजनं सम्पादयति।...एवं सुग्रीवविभीषणप्रभृतिरपि रामादिनोपक्रियमाणे रामादेरात्मनश्चोपकाराय प्रभवमाने प्रसिद्धिप्रशस्त्यै सम्पादयतीति।.... पताकावदुपयोगित्वादियं पताकेति चिरन्तनाः। पूर्वोक्त पृ० १५

११. तावत्येव पताकानायकस्य स्वफलसिद्धिर्निबध्यते। निर्वहणसन्धावपि तत्फले निबध्यमाने तुल्यकालयोरुपकार्योपकारकत्वाभावात् न तेन प्रधानस्योपकारः स्यात्। सिद्धफलस्त्वसौ प्रधानफल एव व्याप्रियमाणो भूतपूर्वगत्या पताकाशब्दवाच्य इति। पृ० ३९

....तावत्येव पताकानायकस्य स्वफलसिद्धिरूपनिबन्धनीया, सिद्धफलस्त्वसौ प्रधानफल एव व्याप्रियमाण आसीनोऽपि भूतपूर्वगत्या पताकाशब्दवाच्यो न मुख्यत्वेन।....निर्वहणपर्यन्ते तत्फले क्रियमाणे तुल्यकालयोरुपकारकत्वाभावात् तेन प्रधानोपकारो न भवेत्। पूर्वोक्त पृ० १८

१२. अन्यस्मिन्नुपाये चिन्तिते सहसोपायान्तर प्राप्तिर्यथा नागानन्दे जीमूतवाहनस्य शङ्खचूडादप्राप्तवध्यपटस्य कञ्चुकिना वासोयुगलार्पणम्। पृ० ४०

अस्मिन्नुपाये चिन्तिते सहसोपायान्तरप्राप्ति यथा-नागानन्दे जीमूतवाहनस्य शङ्खचूडाप्राप्तवध्यपटस्य कञ्चुकिना वासोयुगलार्पणम्। पूर्वोक्त पृ० २०

१३. यथा रामाभ्युदये द्वितीयेऽङ्के सीतां प्रति सुग्रीवस्य संदेशोक्तिः—'बहुनाऽत्र किमुक्तेन' ....।अत्र पारेऽपि जलधेरित्यतिशयोक्तिरपि सीतां प्रति तथैव वृत्तत्वात् प्रकृतसम्बद्धा। अत्र चातिशयोक्तिमात्राच्चिन्तितात् प्रयोजनादपरं तथैव सोताहरणं प्रयोजनं सम्पन्नमिति सामान्यलक्षणम्। पृ० ४०

यथा रामाभ्युदये तृतीयेऽङ्के सीतां प्रति सुग्रीवस्य संदेशोक्तिः—'बहुनात्र किमुक्तेन....।।' अत्रान्य प्रयोजने नातिशक्त्याशयेन प्रयुक्तेऽपि वचसि पारेऽपीत्यादिप्रकृतोपयोगातिशयात् पताकास्थानकम्। पूर्वोक्त पृ० २०

१४. उपायानुष्ठानस्यावश्यकर्तव्यादिना व्यवधाने सति नायक-प्रतिनायकामात्यदीनां यदनुसन्धानं ज्ञानमसौ ज्ञानविचारणफललाभोपायत्वाद् बिन्दुः। सर्वव्यापित्वाद् वा जले तैलबिन्दुरेव बिन्दुः।....केवलं बीजं मुखसन्धेरेव प्रभृति निबध्यते, बिन्दुस्तु तदनन्तरमिति। पृ० ४१

प्रयुज्यते फलं यैरुपायानुष्ठानैः तेषामितिवृत्तवशादवश्यकर्तव्यतादिभिर्विच्छेदेऽपि सति यदनुसन्धानात्मकं प्रधाननायकगतं सन्धिद्रव्यज्ञानं बिन्दु, ज्ञानविचारणं फललाभोपायत्वात्। पूर्वोक्त पृ० १३;....तैलबिन्दुवत् सर्वव्यापकत्वादपि बिन्दुः। बीजं च मुखसन्धेरेव प्रवर्त्यात्मानमुन्नेषयति बिन्दुस्तदनन्तरमिति विशेषोऽनयोः....। पूर्वोक्त पृ० १४

१५. प्रधाननायक-पताकानायक - प्रकरीनायकैः साध्ये प्रधानफलत्वेनाभिप्रेते बीजस्य प्रारम्भावस्थोत्क्षिप्तस्य प्रधानोपायस्य सहकारी सम्पूर्णतादायी सैन्य-कोश-दुर्ग-

प्राज्ञैः प्रधाननायकपताकानायकप्रकरीनायकैश्चेतनरूपैः....सम्पूर्णतादायी पूर्वपरिगृहीतस्य प्रधानस्य बीजाख्योपायस्य फलम् आरभत इत्यारम्भ शब्दवाच्यो द्रव्य क्रियागुणप्रभृतिः सर्वोऽर्थः सहकारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामाद्युपायलक्षणो द्रव्य-गुण-क्रिया-प्रभृतिः सर्वोऽर्थश्चेतनैः कार्यते फलमिति कार्यम् । पृ० ४२	कार्यमित्युच्यते, चेतनैः कार्यते फलमिति व्युत्पत्त्या ···तेन जनपदकोश दुर्गादिक व्यापार वैचित्र्यंसामाद्युपायवर्ग इत्येतत्सर्वं कार्येऽन्तर्भवति । पूर्वोक्त पृ० १६.
१६. ··· बाहुल्यं प्राधान्यं वा निबन्धनीयम् । पृ० ४२	···प्रधानत्वेन बाहुल्येन निबन्धनीयम् । पूर्वोक्त पृ० १६.
१७. पञ्चानामवश्यम्भावमाह । ····उद्देशोक्तक्रमेणैव निबध्यन्ते ।····प्रेक्षापूर्वकारिणां हि प्रथमारम्भस्ततः प्रयत्नस्ततः सम्भावना ततो निश्चयस्ततः फलप्राप्तिरित्ययमेव क्रम इति । पृ० ४४	उद्देशक्रमेणैव प्रयोक्तृभिः कविभिः निबन्धनीयतया ज्ञातव्याः । ····चावश्यंभाविक्रमत्वमासामुच्यते । न हि प्रेक्षापूर्वकारिणोऽवस्थान्तरासम्भावनायां प्रारम्भ उचितो भवति, तत् प्रारम्भश्चेदुत्तरोत्तरावस्थाप्रसर एव । पूर्वोक्त पृ० ६.
१८. तदर्थमौत्सुक्यमुपायविषयमनेनोपायेनैतत् सिध्यतीति स्मरणोत्कण्ठाऽऽदिकर्म तदनुगुणो व्यापारश्चोभयमारम्भः । पृ० ४४	····यदौत्सुक्यमात्रं तद्विषयस्मरणोत्कण्ठानुरूपं, अनेनोपायेनैतत् सिद्ध्यतीति,····प्रारम्भः । पूर्वोक्त पृ० ६.
१९. मात्रशब्देन फलान्तरयोगः प्रतिबन्धनिश्चयश्च व्यवच्छिद्यते । पृ० ४५	तस्यकार्यान्तरयोगः प्रतिबन्धकवारणं च मात्रपदेनावधारितम् । पूर्वोक्त पृ० ७.
२०. ····निश्चयो नियता फलव्यभिचारिण्याप्तिः । पृ० ४६	····नियतां नियन्त्रितां फलव्यभिचारिणीं पश्यति तदा नियतफलप्राप्तिर्नामावस्था । पूर्वोक्त पृ० ७.
२१. इह च तावत् पुरुषकारमात्राभिनिवेशिनां दैवमपाकुर्वतां नास्तिकानां दैवबहुमानव्युत्पत्तये पुरुषकारोऽप्यफलस्तदभावोऽपि सफल इति दर्शनीयम् । पृ० ४७	पुरुषकारमात्राभिमानिनां दैवमवजानानां चार्वाकादितमेमधुषां, स दैवबहुमान व्युत्पत्तये हि पुरुषकारोऽप्यफलः, तदभावोऽपि सफलः प्रदर्शनीयः····। पूर्वोक्त पृ० ८.
२२. अपरथा परतः प्राप्तमपि फलं नाङ्गीकुर्यादिति । पृ० ४७	अपरथा परतः प्राप्तमपि फलं नाङ्गीकुर्यात् । पूर्वोक्त पृ० ९.
२३. महावाक्यार्थस्यांशा भागाः परस्परं स्वरूपेण चाङ्गैः सन्धीयन्त इति सन्धयः । पृ० ४८	महावाक्यार्थरूपस्य··· तेनार्थावयवा सन्धीयमानाः परस्परमङ्गैश्च सन्धय इति । पूर्वोक्त पृ० २३.
२४. प्रारम्भावस्थाभावित्वात् प्रधानवृत्तस्य भागो मुखमिव मुखम् ।····प्रारम्भोपयोगी यावानर्थराशिः प्रसक्तानुप्रसक्त्या विचित्ररससन्निवेशस्तावान् मुखसन्धिरित्यर्थः । यथा रत्नावल्यां प्रथमोऽङ्कः । अत्र हि सागरिका-राजदर्शनरूपे अमात्यप्रारम्भविषयीकृतेऽर्थराशौ अमात्ययौगन्धरायणस्य पृथ्वीसाम्राज्यविजिगीषोर्वीरः, वत्सराजस्य वसन्तविभावः शृङ्गारः, पौर-	प्रागारम्भभावित्वान्मुखमिवमुखम् । प्रारम्भोपयोगी यावानर्थराशिः प्रसक्तानुप्रसक्त्या विचित्रास्वाद आपतितः तावान् मुखसन्धिः । पूर्वोक्त पृ० २३; यथा रत्नावल्यां प्रथमोऽङ्कः, तथा हि आमात्यस्य वीरो, वत्सराजस्य शृङ्गाराद्भुतौ, ततः शृङ्गार इति इयानयं सागरिकाया राजदर्शनेऽमात्यप्रारम्भविषयीकृतेऽर्थराशिरुपयोगीति मुखसन्धिः । पूर्वोक्त भाग-३ पृ० २४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रमोदावलोकनादद्भुतः, ततः उद्यानगमनादारभ्य पुनः शृङ्गारः इति । पृ० ४८

२५. ···स मुखस्याभिमुख्येन वर्तत इति प्रतिमुखम् । पृ० ४८

····प्रतिमुखं प्रतिराभिमुख्येन यतोऽत्र वृत्तिः । पूर्वोक्त पृ० २५.

२६. ह्यमात्येन सागरिकाचेष्टितरूपं बीजं मुखसन्धौ न्यस्तं वसन्तोत्सव-कामदेवपूजाऽऽदिना तिरोहितत्वादीषल्लक्ष्यम् । तस्य च सुसङ्गतारचित-राज-सागरिकी-समागम-नेन द्वितीयाङ्के उद्घाट इति । पृ० ४९

····अमात्येन सागरिकाचेष्टितं वसन्तोत्सवकामदेव पूजादिना तिरोहितं नष्टमिव····सुसङ्गतारचित-राजतत्समागमपर्यन्तं काव्यं द्वितीयाङ्कगतं प्रतिमुखसन्धिः । पूर्वोक्त पृ० २४-२५.

२७. उत्पत्त्युद्घाटन—दशाद्वयाविष्टस्य बीजस्योन्मुख्यं फलजननाभिमुख्यं तद्वान् । पृ० ४९

उत्पत्त्युद्घाटन दशाद्वयाविष्टस्य बीजस्य यत्रोद्भेदः फलजननाभिमुख्यत्वं स गर्भ । पूर्वोक्त पृ० २५.

२८. अत्रमर्शसन्धौ तु प्राप्त्यंशः प्रधानम् । पृ० ४९

अवमर्शे त्वप्राप्तेरेव प्रधानता····। पूर्वोक्त पृ० २६.

२९. जनक-विघातकयोस्तुल्यबलत्वात् सन्देहात्मकत्वम्····नियतफलाप्तिरूपत्वम् । 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि भवन्ति' इति····। पृ० ५०.

····जनक विघातकयोस्तुल्यबलत्वात् कथं न संदेहः ।····नियता फलप्राप्तिरुच्यते । श्रेयांसि बहुविघ्नानीति···· । पूर्वोक्त पृ० २७

३०. यथा रत्नावल्यामैन्द्रजालिकप्रवेशात् प्रभृत्यासमाप्तेरिति । पृ० ५१

उदाहरणं रत्नावल्यामैन्द्रजालिकप्रवेशात्प्रभृत्यासमाप्तेः । पूर्वोक्त पृ० २९.

३१. नृ-स्त्रियोः परस्परमीहा····। पृ० ६१

····प्रमदा पुरुषो या तदर्था या समीहा····। पूर्वोक्त पृ० ४२.

३२. य एव मुखे रस उपक्षिप्यते । ····कामफले च रूपके···प्रतिमुखे विलासेन स एव विस्तार्यते । ··यस्तु वेणीसंहारे भानुमत्या सह दुर्योधनस्य दर्शितो रत्यभिलाषरूपो विलास , स नायकस्य तादृशेऽवसरेऽनुचितः । यदाह—सन्धि—सन्ध्यङ्गघटनं रसबन्धव्यपेक्षया । न तु केवल शास्त्रार्थस्थितिसम्पादनेच्छया ॥', इति । पृ० ६२

····एव हि रसो मुख उपक्षिप्तः । पूर्वोक्त पृ० ४३; कामफलेषु रूपकेषु प्रतिमुख एव ह्यास्थाफलत्वेन रतिरूपेण भाव्यम् ।····यस्तु वेणीसंहारे भानुमत्या सह दुर्योधनस्य दर्शितो विलासः, स नायकस्य तादृशेऽत्रसरेऽत्यनुचितः इति चिरन्तनैरेवोक्तम् । यथा सहृदयालोककारः—'सन्धिसन्ध्यङ्गघटनं रसबन्धव्यपेक्षा । न तु कवलशास्त्रार्थस्थितिसम्पादनेच्छया । पूर्वोक्त पृ० ४२.

३३. दोषाच्छादनाय यत् पुनर्हसनं हास्यहेतुर्वाक्यं सा तस्य नर्मणो द्योतनं नर्मद्युतिः । यथा रत्नावल्याम्—····अत्र मौर्ख्यदोषंछादयितुं यद् विदूषकेणोच्यते, तद् राज्ञो हास्यहेतुत्वान्नर्मद्युतिः । पृ० ६७

दोषो येनोक्तेन प्रच्छादयितुमिष्यते तस्यापि हास्यजननत्वेन नर्म च सुतरां द्योतितं भवतीति नर्मद्युतिः । यथा च रत्नावल्यां द्वितीयेऽङ्के विदूषकः । ····अत्र हि मौर्ख्यदोषं छादयितुं यद्विदूषकेणोच्यते तद्राज्ञो हास्यजननमिति नर्मैव द्योतितं भवति । पूर्वोक्त पृ० ४४.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. अनियतो ह्याकारो रूपमुच्यते । पृ० ७३

....रूपमिति चानियता आकृतिरुच्यते । पूर्वोक्त पृ० ४८.

३५. निश्चयरूपत्वादेव चोहरूपाया युक्तेर्भिद्यते। पृ० ७४

....निश्चयात्मकत्वादूहः । पूर्वोक्त पृ० ४९.

३६. लोकप्रसिद्धवस्त्वपेक्षया यः समुत्कर्षः समुत्कृष्टोऽर्थः, स उत्कर्षाहरणादुदाहृतिः । पृ० ७५

लोकप्रसिद्धवस्त्वपेक्षया यत् सातिशयमुच्यते उत्कर्षमाहरतीत्युदाहरणम् । पूर्वोक्त पृ० ४८.

३७. भावस्य परा॑भिप्रायस्याथवा भाव्यमानस्यार्थस्योह प्रतिभाऽऽदिवशान्निर्णयो । ....बुद्धिस्तत्र क्रमते, न प्रतिहन्यत इत्यर्थः । पृ० ७६

भावस्य भाव्यमानस्य वस्तुनो भावनातिशये सत्यूहं प्रतिभावनादिबलात्.... । बुद्धिर्हि तत्र क्रमते न प्रतिहन्यते । पूर्वोक्त पृ० ४९.

३८. भयत्रासकारिणो वस्तुनो या शङ्काऽपायकारकत्वसम्भावना, सा द्रवति श्लथीभवति हृदयमनयेति द्रवः । पृ० ७७

भयत्रासकारिणो वस्तुनो या शङ्का यदाशङ्कनं स विद्रवः, विद्रवति विलीयते हृदयं येनेति । पूर्वोक्त पृ० ५२.

३९. ....प्रकर्षेणाविर्भावनमाक्षेपः । ....अभिप्रायस्य बहिष्कर्षणमाक्षेपः । यथा रत्नावल्यां वासवदत्तायामेव सागरिकेति राज्ञा विदूषकेण च परिगृहीतायां तदुक्तिषु-प्रियसागरिके ! शीतांशुर्मुखमुत्पले.... । पृ० ७८

....अभिप्रायस्य हि तत्राक्षेपो बहिः कर्षणम् । वासवदत्तायामेव सागरिकेति राज्ञा विदूषकेण च परिगृहीतायां तदुक्तिषु सागरिके शीतांशुर्मुखमुत्पले इत्यादिषु । पूर्वोक्त पृ० ५०.

४०. परस्परवञ्चनप्रवृत्तयोर्यस्य बुद्धिसहायादिबलाधिक्येन यत्कर्मेतरमभिसन्धातुं समर्थं, तत् कर्म छलविषये अधिक(बल)-छलयोगादधि(बल)छलम् । यथा रत्नावल्याम्—'किं पद्मस्य.... ।' अत्र सागरिकावेषं धारयन्ती विदूषकबुद्धिदौर्बल्याद् वासवदत्ता राजानमभिसन्धत्ते । पृ० ७९

परस्परवचनप्रवृत्तयोर्यस्यैवाधिकं (कर्म) सहाय बुद्ध्यादोनबलम्बयति स एव तमतिसन्धातुं वञ्चयितुं समर्थ इति तदिदं कर्माधिबलम् । यथा—सागरिकावेषं धारयन्ती वासवदत्ता विदूषकबुद्धिदौर्बल्याद्राजानमतिसंधत्ते किं पद्मस्य....' इत्यादि श्लोकान्तमधिबलम् । पूर्वोक्त पृ० ५१.

४१. क्रोध-हर्षादि-सम्भूतावेग-गर्भितं वचनं तोटयति भिनत्ति हृदयमिति तोटकम् । पृ० ८१

आवेगगर्भं यद् वचनं तत्तोटकम् । स चावेगो हर्षात्, क्रोधात् अन्यतोऽपि वा । भिनत्ति यतो हृदयं ततस्तोटकम् । पूर्वोक्त पृ० ५१.

४२. व्यतिक्रमो मार्गाच्चलनम् । यथा रत्नावल्यां सन्निहितं भर्तारमवगणय्य विदूषकस्य सागरिकायाश्च वासवदत्तया बन्धनमिति । पृ० ८२

यथा भर्तृसंनिधानेऽपि विदूषकस्य सागरिकायाश्च वासवदत्तया बन्धनम् । ....द्रवणं चलनं मार्गादिति द्रवः । पूर्वोक्त पृ० ५३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. यद्यपि श्रमोद्वेग-वितर्कादयो व्यभिचारि-मध्ये लक्षयिष्यन्ते, तथापि रसविशेष-पुष्टयर्थं सन्ध्यङ्गावसरेऽपि लक्ष्यन्त इति। पृ० ८६

यद्यपि श्रमोद्वेग वितर्कलज्जाप्रभृतयो व्यभिचारिवर्गे···सत्यवसरेऽवश्यप्रयोज्याः····सन्ध्यङ्गत्वेनोक्ता मन्तव्याः। पूर्वोक्त पृ० ५५.

४४. क्रुद्धस्य प्रसादनमनुकूलनं बुद्धि-विभवादि-शक्तिकार्यत्वेन सा शक्तिः। पृ० ८८

विरोधिनः कुपितस्य प्रशमः प्रसादनं शक्तिः बुद्धि-विभवादिशक्तिकार्यत्वात्। पूर्वोक्त पृ० ५३.

४५. अथनिर्वहणसन्धेरङ्गानि लक्षयितुमुद्दिशति। पृ० ९१

अथ निर्वहणसन्धावुद्देशक्रमेणाङ्गानि लक्षयितुं प्रक्रमते। पूर्वोक्त पृ० ५७.

४६. स्वापराधोद्घट्टनं परिभाषा। पृ० ९३

····अन्योन्यापराधोद्घट्टनं वचनम्। पूर्वोक्त पृ० ५८.

४७. प्रकारशतैर्वाञ्छितस्यार्थितस्य सामस्त्येन आगमः प्राप्तिरानन्दहेतुत्वादानन्दः। पृ० ९६

अर्थितस्य तथेति प्रकारशतै प्रार्थितस्य सम्यगपुनर्वियोगवद्यदागमनं तदानन्तहेतुत्वादानन्दः। पूर्वोक्त पृ० ५८.

४८. ····इतिवृत्तस्याविच्छेदश्च रसपुष्टयर्थः, विच्छेदे हि स्थाय्यादेस्त्रुटित्वात् कुतस्त्यो रसास्वादः? पृ० १०२

इति वृत्ताविच्छेदोऽपि हि रसस्यैव पोषकः, अन्यथा विच्छेदे स्थाय्यादेस्त्रुटितत्वात् क्व रस-वार्ता। पूर्वोक्त भाग-३ पृ० ६२.

४९. योग्यतां च रसनिवेशैकव्यवसायिनः प्रबन्धकवयो विदन्ति, न पुनः···मुक्तककवयः। पृ० १०२

योग्यतां च कविरेव जानाति, न च मुक्तक कविः। पूर्वोक्त पृ० ६२.

५०. एवं च पुष्पदूषितकेऽशोकदत्तादिशब्दाकर्णनेन समुद्रदत्तस्य नन्दयन्त्यां या व्यलोकशङ्कोपनिबद्धा, सा न दोषाय। परपुरुषसम्भावनाया निर्वहणं यावदत्रोपयोगित्वात्।····पुत्रे दूरस्थिते निर्वासनं, निर्वासितायाश्च शबरसेनापतिगृहेऽवस्थानमनुचितमेव।····वणिगमात्यविप्राश्च स्ववर्गापेक्षयैवोत्तमाः, न राजापेक्षया।········प्रकरणे हि नायको व्युत्पादस्य। पृ० १०३

एतदेवाभिमन्यमानेन पुष्पदूषितकेऽशोकदत्तादिशब्दाकर्णनेन समुद्रदत्तस्य शङ्का योपनिबद्धा सा न दोषाय निर्वहणान्तोपयोगिनो हि नन्दयन्तीनिर्वासनं तस्याश्च गृहान्तरावस्था। इदमेव मुखसन्धौ मूलं परपुरुषसम्भावनामूलत्वात्। एवमनभ्युपगमे तु श्वशुरेण बध्वा असन्निहिते पुत्रे निर्वासनं शबरसेनापतिगृहेऽवस्थानमित्युत्तमप्रकृतीनामनुपपन्नमेव। तस्मात् स्ववर्गापेक्षयेदमुत्तमत्वमद्यतनेराजोचितानामुत्तमप्रकृतीनां वणिङ्मात्रे····। प्रकरणे हि तादृश एव नायकः।····व्युत्पाद्यश्च। पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ४३२.

५१. तथा च वेश्यायां नायिकायां विनयरहितमपि चेष्टितं निबध्यते। यथा विशाखदेवकृते देवीचन्द्रगुप्ते माधवसेनां समुद्दिश्य कुमारचन्द्रगुप्तस्योक्तिः····। पृ० १०४

····आचारः कुलस्त्रियां विनयप्रधानः अन्यस्यां तद्विपरीतः। तथा च देवीचन्द्रगुप्ते वसन्तसेनामुद्दिश्य चन्द्रगुप्तस्योक्तिः। पूर्वोक्त पृ० ४३३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२. तत्र कञ्चुकिस्थाने दासः। अमात्यस्थाने श्रेष्ठी। विदूषकस्थाने विटः। पृ० १०४

कञ्चुकिस्थाने दासः, विदूषकस्थाने विटः, अमात्यस्थाने श्रेष्ठीत्यर्थः। पूर्वोक्त पृ० ४३१.

५३. गृहवार्तायां गार्हस्थ्योचितपुरुषार्थसाधके वृत्ते कुलजैव स्त्री नायिकात्वेन वणिगादीनां निबन्धनीया····। पृ० १०४

····गार्हस्थ्योचिता वार्ता पुरुषार्थसाधकमितिवृत्तं न तत्र वेश्याङ्गना नायिकात्वेन निबन्धनीया। पूर्वोक्त पृ० ४३२.

५४. ····पूर्वकविकृतकाव्यादौ क्लृप्तं सत् समुद्रदत्ततच्चेष्टितादिवद् ग्राह्यम्। अथवा यदत्राकल्प्यं तत् पूर्वर्षिप्रणीतशास्त्रव्यतिरिक्तं बृहत्कथाऽऽद्युपनिबद्धं मूलदेवतच्चरितादिवदुपादेयम्। पृ० १०५

अनार्षमिति पुराणादिव्यतिरिक्तबृहत्कथाद्युपनिबद्धं मूलदेवचरितादि। आहार्यमिति पूर्वकविकाव्याद् वाहरणीयं समुद्रदत्तचेष्टितादि। पूर्वोक्त पृ० ४३०.

५५. तयोः प्रत्येकं प्रसिद्ध्यप्रसिद्धिभ्यां चतुर्भेदत्त्वान्नाटिकाऽपि चतुर्विधा। पृ० १०७

तथा हि देवी कन्या च ख्याताख्यातभेदेन चतुर्धा। पूर्वोक्त पृ० ४३६.

५६. नियुद्धं बाहुयुद्धम्, स्पर्धनं शौर्य-विद्या-कुल-धन-रूपादि-कृतः संहर्षः। पृ० १०९

नियुद्धं बाहुयुद्धं संघर्षः शौर्यविद्याकुलरूपादिकृता स्पर्धा। पूर्वोक्त पृ० ४४५.

५७. अत एवात्र गद्यं पद्यं चौजोगुणयुक्तम्। ·······सेनापत्यमात्यादि - दीप्तरसनायक-सम्पन्नः। पृ० १०९

दीप्तं काव्यामोजोगुणयुक्तम्। पूर्वोक्त पृ० ४४५; ····अपि त्वमात्यसेनापतिप्रभृतेर्दीप्तरसस्य···। पूर्वोक्त पृ० ४४४.

५८. यथा शाक्यानां स्त्रीसम्पर्को गर्हणीयो न चौर्यम्। पृ० ११३

यथा शाक्यानां स्त्रीसम्पर्कः प्रहसनीयो भवति, न चौर्यम्। पूर्वोक्त पृ० ४४९.

५९. अङ्कावताररूपाश्चात्राङ्का विधेयाः। चूलिकाऽङ्कमुखयोरपि युद्धादिवर्णने निबंधो भवत्येव। पृ० ११४

अङ्कावतार एव चात्र भवति। चूलिकाङ्कमुखयोस्त्वत्रापि युद्धादिवर्णने समुपयोगोऽस्त्येव। पूर्वोक्त पृ० ४४४.

६०. दैवोपालम्भात्मनिन्दाऽऽदिरूपानुशोचनात्मकं परिदेवितम्···। पृ० ११५

परिदेवितं दैवोपालम्भात्मनिन्दारूपमनुशोचनं यत्र। पूर्वोक्त पृ० ४४६.

६१. ते च यथासम्भवं स्त्रीविषया अन्यविषया वा। पृ० ११६

····यथायोगं स्त्रीविषयाणि अन्यविषयाणि····। पूर्वोक्त पृ० ४४२.

६२. शरीरिणि व्याजेन पलायनादिना····। पृ० ११६

व्याजमिति पलायनादि। पूर्वोक्त पृ० ४४२.

६३. शङ्कुकस्त्वधमप्रकृतेर्नायकत्वमनिच्छन् प्रहसन-भाणादौ हास्यरसप्रधाने विटादेर्नायकत्वं प्रतिपादयन् कथमुपादेयः स्यादिति। ····द्वाभ्यां पात्राभ्यामुक्ति-प्रत्युक्ति–वैचित्र्यविशिष्टाभ्यामेकेन वा पात्रेणाकाश भाषितसमन्वितेन युक्ताः···। पृ० ११७

अधमप्रकृतेस्तु न नायकत्वमिति ध्रुवं प्रहसनकभाणकादौ किं ब्रूयात्, हास्यादिरसप्रधानत्वे ह्यधम एव नायकः। पूर्वोक्त पृ० ४५९; एकहार्यैरित्याकाशपुरुषभाषितैरित्यर्थः। द्विहार्येति उक्तिप्रत्युक्तिवैचित्र्येणेत्यर्थः। पूर्वोक्त पृ० ४५३.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६४. मिथः परस्परं जल्पे उक्ति-प्रत्युक्तिक्रमे क्रियमाणे स्वपक्षस्य स्वाभ्युपगमस्य परस्परप्रज्ञोपजीवनबलात् स्थापना सुघटितत्वं क्रियते यत्र, तदधिकबलसम्बन्धादधिबलम् । पृ० ११९

यत्रोक्तिप्रत्युक्तिक्रमे क्रियमाणे परस्परप्रज्ञानोपजीवनबलात्स्वपक्षसुघटितादधिबलसंबन्धादधिबलम् । पूर्वोक्त पृ० ४५७.

६५. एतद् वचः सख्या भर्तृप्रत्यायनप्रयोजनेनोक्तं विदग्धजनस्य हास्यं श्वशुरादेर्वञ्चनां, सपत्न्या रोषं जनयतीति । पृ० १२६

एतद्वचनं सखी-संबन्धि भर्तृप्रत्यायनं प्रयोजनमुद्दिश्य प्रयुक्तं तस्य पत्न्या अपि संबन्धिनां छलं विदग्धजनस्य हास्यं सपत्न्या वचनं रोषं जनयति । पूर्वोक्त पृ० ४५८.

६६. ····प्रत्यसतोऽसाधुभूतस्य प्रलपनम् असत्प्रलापः । पृ० १२७

असतोऽसाधुभूतस्य वस्तुनः प्रलपनमस्मिन्नित्यसत्प्रलाप इति । पूर्वोक्त पृ० ४५६.

६७. यथा वा व्यसनिना राजपुत्रेण किं सुखमिति पृष्टे मन्त्रिपुत्रेणोच्यते—'सर्वदा यो.... ।' पृ० १२७

····यथा व्यसनिना राजपुत्रेण किं सुखमिति पृष्टे तेनोत्तरं दीयते—'सर्वथा यो···· ।' पूर्वोक्त पृ० ४५६.

६८. परविप्रतारणकारि यदुत्तरं हास्याय हास्यनिमित्तं निगूढार्थत्वाद् भवति सा नाली व्याजरूपा प्रणालिका । पृ० १२९

परवितारणकारि यदुत्तरं, अत एव हास्ययुक्ता सा नालिका प्रणालिका व्याजेत्यर्थः । पूर्वोक्त पृ० ४५५.

६९. गुणानां दोषत्वं, दोषाणां च गुणत्वं येनोत्तरेण व्यत्ययो विपर्यासः क्रियते, तन्मृदा परपक्षमर्दनेन स्वपक्षमवति रक्षतीति मृदवम् । पृ० १२९

गुणानां दोषत्वं दोषाणां वा गुणत्वं यत्र क्रियते तन्मृदवम् । ···मृदवमिति मर्दनं मृत्परपक्षमर्दनेन स्वपक्षभवति रक्षतीति । पूर्वोक्त पृ० ४५७.

७०. ····उद्घाते प्रश्नात्मके साधूद्घात्यम् । यदा प्रष्टा विवक्षितोत्तरदानसमर्थः, किन्तु यन्ममाभिप्रेतं तद्युक्तमयुक्तं वेत्यभिसंधाय पृच्छति, प्रतिवक्ता चोचितमभिधत्ते तदोद्घात्यमित्यर्थः । पृ० १३१-१३२

तत्र यदा विवक्षितमुत्तरं दातुं शक्तोऽयं स्यादिति यन्मम मनसि वर्तते तदेव वक्ति नवेत्येवमादिना निमित्तेन यदा पृष्टैव प्रतिवचनं वैचित्र्यमभिसन्धाय पृच्छति, प्रतिवक्तोचितमभिधत्ते तदा तदुत्तरमुद्घात्यकम् । प्रश्नात्मके उद्घाते साध्विति यत् । पूर्वोक्त पृ० ४५४.

७१. विवक्षितप्रयोजनस्यान्यकार्यकरणव्याजेन सम्पत्तिर्यत्र तदन्यकार्यावलगनादवलगितम् । पृ० १३२

यत्रोत्तरे दीयमाने अन्यानुसन्धानपूर्वकेऽप्यन्यत्कार्यं सिध्यति तदान्यकार्यावलगनादवलगतम् । पूर्वोक्त पृ० ४५४.

७२. पुरुषार्थसाधको विचित्रो व्यापारो वृत्तिः । पृ० १३५

तस्माद् व्यापारः पुमर्थसाधको वृत्तिः । पूर्वोक्त पृ० ४५२.

७३. कायिक्यो हि व्यापृतयो मानसैर्वाचिकैश्च व्यापारैः सम्भिद्यन्ते । पृ० १३५

कार्यचेष्टा अपि हि मानसीभिः सूक्ष्माभिश्च वाचिकीभिश्चेष्टभिर्व्याप्यन्त एव । पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ९१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७४. वाचिक्यो मानस्यश्च कायपरिस्पन्दाविनाभाविन्य एव····प्राणादिरूपकायपरिस्पन्दाभावे मनोव्यापृत्यनुपलक्षणाच्च। पृ० १३५

मानस्यापि वाचिक्यपि चेष्टा अवश्यं सूक्ष्मं कालं परिस्पन्दमन्दप्राणव्यापाररूपं नाभिवर्तते। पूर्वोक्त ना० शा० भाग-३ पृ० ९१.

७५. आभ्यो हि वर्णनीयत्वेन कविहृदये व्यवस्थिताभ्यः काव्यमुत्पद्यते। पृ० १३५

····ताभ्योऽपि वाच्यरूपत्वेन कविहृदये व्यवस्थिताभ्यः काव्यमुत्पद्यते। पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ४०८

७६. तेनानभिनेयेऽपि काव्ये वृत्तयो भवन्त्येव। पृ० १३५

वृत्त्यङ्गान्यपि सर्वकाव्येषु सन्त्येव।····यद्यपि सर्वेषामभिनेयानभिनेयानां काव्यानां वृत्तयः। पूर्वोक्त पृ० ४०८.

७७. ···न हि व्यापारशून्यं किञ्चिद् वर्णनीयमस्ति। पृ० १३५

न च क्रियाशून्यः कश्चिदप्यंशोऽस्ति।····तेषु च न व्यापारत्रयशून्यः कश्चिदपि काव्यांशोऽस्ति। भाग-३, पृ० ८७.

७८. मूर्च्छादौ तु व्यापाराभावेन वृत्त्यभावेऽपि···। पृ० १३५

मूर्च्छादौ तु व्यापाराभावे वृत्त्यभाव एव। पूर्वोक्त भाग-२ पृ० ४५२.

७९. 'आङ् मर्यादायाम्' तेन मुखसन्धि सम्प्राप्य निवर्तते। 'ईषदर्थे वा' तत ईषन्मुखं मुखसन्धिसूचकत्वादारम्भः। प्रस्तावना शब्देनाप्येतदुच्यते। पृ० १३६

मुखसन्धेर्निवर्तते यतः, आङ्मर्यादायाम्, यदि वात्रामुखं प्रारम्भमीषन्मुखं वा प्रस्ताव्यतेऽनयेति। पूर्वोक्त भाग-३ पृ० ९३.

८०. स्पष्टोक्तिस्त्वेवं यथा नागानन्दे नाटयितव्ये'····। पृ० १३६

स्पष्टोक्तिप्रत्युक्तिभिः, यथा नागानन्दे 'नाटयितव्ये····।' पूर्वोक्त पृ० ९३.

८१. सत् सत्त्वं प्रकाशस्तद् यत्रास्ति तत् सत्त्वम्मनस्तत्र भवा····। पृ० १३९

सत्सत्त्वं प्रकाशः तद्विद्यते यत्र तत्सत्त्वं मनः, तस्मिन् भवः। पूर्वोक्त पृ० ९६.

८२. आधर्षो वाचा न्यक्कारः। पृ० १३९

आधर्षणं वाचा न्यक्कारः। पूर्वोक्त पृ० ९७.

८३. ····सूत्रधारे तत्तुल्यगुणाकृतिस्थापक आमुखमनुतिष्ठति। पृ० १३९

एवं च यदा स्थापकोऽपि सूत्रधारतुल्यगुणाकारो···· आमुखं भवति। पूर्वोक्त पृ० ९३.

८४. दीप्ता रसा रौद्रादय औद्धत्यावेगादिहेतवः। पृ० १४०

दीप्तरसा रौद्रादयः उद्धताः।····क्रोधावेगाद्यास्ते····। पूर्वोक्त पृ० १०३.

८५. भय-हर्षातिशयाकुलितपात्रप्रवेशः। पृ० १४०

भयातिशयेन हर्षातिशयेन च क्षिप्रमेव प्रवेशनिर्गमौ····। पूर्वोक्त पृ० १०४.

८६. तत्र विचित्रं नेपथ्यं वेणीसंहारे अश्वत्थाम्नः।····मायाशिरोदर्शनं रामाभ्युदये। पृ० १४०

यथा मायाशिरोनिक्षेपे रामाभ्युदये चित्रं नेपथ्यम्, यथा वाश्वत्थाम्नः। पूर्वोक्त पृ० १०४.

८७. तथाहि अङ्गदेनाभिद्रूयमाणाया मन्दोदर्या भयम्, अङ्गदस्योत्साहोऽस्यैव रावणदर्शनेन

तत्रैव अङ्गदादभिद्रूयमाणाया मन्दोदर्या भयं, अङ्गदस्योत्साहः, ····रावणस्यातिक्रोधः, यस्तातेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'एतेना पिसुरा जिताः' इत्यादि वदतो ह्रासः, 'यस्तातेन निगृह्य बालक इव प्रक्षिप्य कक्षान्ते' इति च जल्पतो जुगुप्सा हास-विस्मयाः, रावणस्य रति-क्रोधौ। पृ० १४१

निगृह्य बालक इव प्रक्षिप्य कक्षान्तरे' इति वदतोऽङ्गदस्य जुगुप्सा-हासविस्मयरसा....। पूर्वोक्त पृ० १०४.

८८. अनेन गृह-भृत्याद्युपमर्दनस्य ग्रहः।....गुणेष्वसूया मात्सर्यम्। द्रोहो जिघांसा दारादि-खलीकार-विद्या-कर्म-देश-जात्यादि-निन्दा-राज्य-सर्वस्वहरणादिराधर्षः। पृ० १४८

आधर्षणं दारादिखलीकरणम्। अविक्षेपो देश-जात्यभिजनविद्याकर्मनिन्दा। ....उपघातो गृह-भृत्याद्युपमर्दनम्।....अभिद्रोहो जिघांसा। मात्सर्यं गुणेष्वसूया। आदिग्रहणाद् राज्यापहरणादि। पूर्वोक्त भाग-१ पृ० ३२०.

८९. पराक्रमः परकीयमण्डलाद्याक्रमणसामर्थ्यम्। बलं हस्त्यश्व-रथ-पदाति-धन-धान्य-मन्त्र्यादिसम्पत्.... । न्यायः सामादीनां सम्यक्प्रयोगः। अनेनेन्द्रियजयो गृह्यते।....अनेन शत्रुविषये सन्तापकर्तृत्व प्रसिद्धिरूपः प्रतापो गृह्यते। पृ० १४९

सन्ध्यादिगुणानां सम्यक्प्रयोगो नयः। इन्द्रियजयो विनयः। बलं हस्त्यश्वरथपादातम्। पराक्रमः परकीयमण्डलाद्याक्रमेणावस्कन्दः।....प्रतापः शत्रु-विषये सन्तापकारिणी प्रसिद्धिः। प्रभावोऽभिजन-धनमन्त्रिसम्पत्। पूर्वोक्त पृ० ३२४-३२५.

९०. निष्ठेवः कफनिरसनम्। उद्वेगो गात्रधूननम्। पृ० १५०

निष्ठीवनं कफनिरासनम्। उद्वेजनं गात्रोद्धूननम्। पूर्वोक्त भाग-१ पृ० ३२९.

९१. इन्द्रजालं मन्त्र-द्रव्य-हस्तयुक्त्यादिनाऽसम्भवद्वस्तुप्रदर्शनम्। रम्यः सातिशयत्वेन हृद्योऽर्थः शिल्पकर्मरूप.... । पृ० १५०

इन्द्रजालं मन्त्रद्रव्यवस्तुयुक्त्यादिना असम्भव-वस्तुप्रदर्शनम्।....अतिशेत इत्यतिशयः।....यच्च शिल्पं कर्मरूपम्....। पूर्वोक्त पृ० ३२९-३३०.

९२. एवंविधरूपैव, अपरेषां तु पाठ्यानामुत्थापनादीनां पूर्वरङ्गाङ्गानां प्रयोगवशादन्यथात्वमपि भवति। पृ० १७१

एवं च नित्यमेवं रूपमेत्र। अन्यपाठ्यानामुत्थापनादीनां प्रयोगवशादन्यथात्वोपपत्तिर्दृष्यते। पूर्वोक्त पृ० २१७.

९३. अत एव कवयो रूपकारम्भे 'नान्द्यन्ते सूत्रधारः' इति पठन्ति। पृ० १७२

पुराणकवयो लिखन्ति स्म 'नान्द्यन्ते सूत्रधारः' इति। पूर्वोक्त पृ० २१७.

९४. यथा उदात्तराघवे रामस्य प्रस्तुतशृङ्गारोल्लङ्घनेन-'अरे रे तापस....। इत्यादि-नेपथ्यवाक्याकर्णनेन वीररसाक्षेपः। पृ० १७३

यथा उदात्तराघवे रामस्य प्रस्तुतशृङ्गारक्रमोल्लङ्घनेन—'अरे तापस....।' इत्यादिना। यथा वाक्याकर्णनेन वीररसस्याक्षेपस्य तु रसस्य माश्रृण्यते। पूर्वोक्त भाग-४, पृ० २६०-२६१.

९५. इयं च प्रावेशिक्याक्षेपिक्यनन्तरमवश्यं प्रयोज्येति वृद्धसम्प्रदायः। पृ० १७३.

....इयं हि प्रावेशिक्याक्षेपिक्या अनन्तरमवश्य-प्रयोज्या भवति। पूर्वोक्त पृ० ३६१.

९६. ....अनुकर्तुर्यदा अनाशङ्कित एव धनविघातादिना विघात उद्धतप्रयोगश्रमाद् वा मूर्च्छा-भ्रमादिसम्भावना वस्त्राभरणादेर्वा

अनकर्जर्यदनाशङ्कितधनविषयादत्युद्धत प्रयोग श्रमवशाद् वा भ्रमादिदोष सम्भावना। वस्त्रा-भरणावकाशादित्सयागीयते सान्तराध्रुवा। तत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रच्युतिस्तदा तत्संवरणावकाशदित्सयेयं गीयते। अस्यां च प्राक्तनं भावि वा रसस्य स्वरूपमनुवर्त्यम्। छिद्राच्छादनमात्रप्रयोजनत्वात् चास्या न सार्थकपदनासनमुपयोगीति शुष्काक्षराण्येवास्यां निबध्यन्ते। पृ० १७३

च प्राक्तनं भावि वा रसस्वरूपमनुवृत्तिमित्यवश्यम्…। केवलं छिद्राच्छदन मात्र प्रयोजनाया-मस्यां न सार्थक पदकदम्बयोजनमुपगीति शुष्काक्षरैरेवेयं लक्ष्ये च…। पूर्वोक्त पृ० ३६१.

९७. यथोपश्रुतिशकुनन्यायेन प्रत्ययेन…। पृ० १७३

इत्यादि काकतालीय श्रुतिशकुनन्यायेन लौकिकस्य। पूर्वोक्त भाग–४ पृ० ३६१.

९८. …न तु देशकालावस्थाद्यपेक्षयानी त्यावसहनपूर्वकं निर्यातनमिति। पृ० १७६

प्राणात्ययेऽपीति न तु नीत्यनुवर्तनेन कथञ्चित् देशकालाद्यनुवर्तनेन सहनपूर्वकं निर्यातनम्। पूर्वोक्त भाग–३, पृ० १६७.

९९. सहजा मुखराग-दृष्टिविकारादिरहिता। पृ० १७६

मुखराग दृष्टि विकारादयः। पूर्वोक्त भाग–२ पृ० १६६.

१००. यथासम्भवं सन्धिं विग्रहेण, विग्रहे सन्धिना च विशेषेण दूषयन्ति, विनाशयन्ति, विप्रलम्भं तु विनोददानेन विस्मारयन्तीति विदूषकाः। पृ० १७८

विग्रहं वा सन्धिना दूषयतीति विदूषकः, विप्रलम्भनत्वे विनोदने दूषयन्ति विस्मारयन्ति। पूर्वोक्त भाग–३ पृ० २५१-२५२.

१०१. यथोर्वशी पुरूरवसः। 'नृपे दिव्ये न च प्रभौ' इत्यस्यापवादोऽयमिति। पृ० १७९

…इत्यस्यापवादमाह दिव्यवेश्येत्यादि। यथा पुरूरवसः उर्वश्या। पूर्वोक्त पृ० १९६.

१०२. अन्यनारी व्यासङ्गादिना…। पृ० १८१

व्यासङ्गादित्यन्यनारीविषयादित्यर्थः। पूर्वोक्त पृ० २०९.

१०३. बाल्येऽपि किञ्चिदुन्मीलन्ति, वार्धके तु प्राचुर्येण नश्यन्ति। पृ० १८१-१८२

ते हि यौवने उद्रिक्ता दृश्यन्ते बाल्ये त्वनुद्भिन्ना वार्धके तिरोभूताः। पूर्वोक्त पृ० १५४.

१०४. पुंसां तूत्साहादयो मुख्यतोऽलङ्काराः। तेन नायकभेदेषूद्धतादिषु धीरत्वं विशेषणमुक्तम्। भावादयस्तु पुरुषाणामुत्साहाद्याच्छादिता एव भवन्तीति ते गौणाः। पृ० १८२

पुंसस्तूत्साहवृत्त्यात एव परमालङ्काराः, तथा च सर्वेष्वेव नायकभेदेषु धीरत्वमेव विशेषणतयोक्तम्। तदाच्छादितास्तु शृङ्गारादयः धीरललित इत्यादौ। पूर्वोक्त पृ० १५८.

१०५. भ्रू-चिबुक-ग्रीवाऽऽदेश्च सातिशयो विकारः शृङ्गारोचित उद्भिद्योद्भिद्य विश्रान्तिमत्त्वेनासन्ततो हाव इति। पृ० १८२

चोद्भ्रूतारकचिबुकग्रीवादेः सातिशयो विकारः… शृङ्गारोचितमाकारम्…। स्वेत्युद्भिद्योद्भिद्य विश्राम्यन् हावः। पूर्वोक्त पृ० १५६-१५७.

१०६. प्रसरणशीलं सश्रृङ्गारं समुचितविभावविशेषोपग्रहविरहादनियतविषयं प्रबुद्धरतिभावसमन्वितं हेला। पृ० १८२

…स तु प्रसरणैकधर्मकः, …यदा तु रतिवासनाप्रबोधात्तां प्रबुद्धां रतिमभिमन्यते केवलं समुचितविभावोपग्रहविरहान्निर्विषयतया स्फुटीभावं न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	प्रतिपद्यते तदा तज्जनितो देहविकारविशेषो हेला। पूर्वोक्त भाग–३ पृ० १५७.
१०७. एते च त्रयोऽङ्गजाः परस्परसमुत्थिता अपि भवन्ति। तथा हि कुमारीशरीरे प्रौढतम कुमारगतभाव-हाव-हेला-दर्शन-श्रवणाभ्यां भावादयोऽनुरूपा विरूपाश्च भवन्ति। पृ० १८२	....अप्येते परस्परसमुत्थिता भवन्ति। तथा हि कुमारीशरीरेप्रौढ़तमकुमार्यन्तरगतहेलावलोकने....। पूर्वोक्त पृ० १५५.
१०८. रागः प्रियतमं प्रत्येव बहुमानः।....मदो मद्यकृतश्चित्तोल्लासः। हर्षः सौभाग्यगर्वः। अन्यथा वक्तव्येऽन्यथा वचनम्, हस्तेनादातव्ये पादेनादानम्, कटीयोग्यस्य कण्ठे निवेशन-मित्यादिकः.... । पृ० १८३	वचनेऽन्यथावक्तव्येऽन्यथाभाषणम्, हस्तेनादातव्ये, पादेनादानम्, रसनायाः कण्ठे न्यासः इत्यादि। मद्येन कृतो रागः प्रियतमं प्रत्येव बहुमानो हर्षः। सौभाग्यगर्वो यथा। पूर्वोक्त पृ० १६०.
१०९. प्रियतमप्रीत्यतिशयेन.... । पृ० १८३	प्रियतमगतैः प्रीत्या तं प्रति बहुमानातिशयेन.... । पूर्वोक्त पृ० १५९.
११०. रूपलावण्यादीनां च पुरुषेणोपभुज्यमानानां यदौज्ज्वल्यं छाया विशेषः.... । पृ० १८४	तान्येव रूपादीनि पुरुषेणोपभुज्यमानानि छायान्तरं श्रयन्ति। पूर्वोक्त पृ० १६२।

इसके अतिक्ति पताकास्थानक, कार्यावस्था और अर्थप्रकृतियों की चेतन एवं अचेतन रूप में की गयी व्याख्या तथा अन्य विविध स्थल भी अभिनवभारती से वैचारिक दृष्टि से प्रभावित तथा अनुप्राणित प्रतीत होते हैं। यह सम्भावना भी सत्य प्रतीत होती है कि रामचन्द्र-गुणचन्द्र द्वारा कथित 'नाट्यदर्पण-विवृत्ति' नाम भी अविनवगुप्त के 'नाट्यवेद-विवृत्ति' से प्रेरित रहा होगा।

इन समस्त तथ्यों को पृष्ठभूमि में भी यह कथन तो अनुचित ही होगा कि नाट्यदर्पण में अभिनवभारतो का अन्धानुकरण किया गया है। वस्तुतः रामचन्द्र-गुणचन्द्र ने अवसर के अनुरूप अभिनवगुप्त के मन्तव्य की आलोचना तथा उनमें संशोधन एवं परिवर्धन भी किया है, परन्तु प्रस्तुत शोध-पत्र की सीमाओं को दृष्टिगत रखते हुए हम यहाँ नाट्यदर्पण के एतत्सम्बद्ध स्थलों का उल्लेख उचित नहीं समझते हैं।

नाट्यदर्पण की विवृत्ति में २ स्थल ऐसे भी प्राप्त होते हैं जिन पर नाट्यशास्त्र और अभिनव भारती का संयुक्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यहीं उनका प्रदर्शन कर देना तो अनङ्ग-कीर्तन ज्ञात नहीं होता है—

१. भावानां साध्यफलोचितानां रतिहर्षोत्सवादीनां याचनं प्रार्थना। पृ० ७४	एतत्साध्यफलोचितभावलक्षणम्। ना० शा० भाग—३। पृ० ५०। रतिहर्षोत्सवानां तु प्रार्थना प्रार्थनाभवेत्। ८६।१९ ना० शा०.
२. चौर-नृपारि-नायकादिभ्यो भयमुद्वेगः। पूर्वोक्त पृ० ७६.	अरिशब्दान्नायकादि। अभि० भा० (ना० शा० भाग –३) पृ० ५१; भय नृपारिदस्यूत्थमुद्वेगः परिकीर्तितः। ८८।१९ ना० शा०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस समस्त विवेचन से नाट्यदर्पण पर अभिवभारती का अत्यधिक प्रभाव है यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है। वस्तुतः यदि नाट्यदर्पण के अभिनवभारती से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित सम्पूर्ण अंशों को उसमे पृथक् कर दिया जाये तो उसका मूल स्वरूप ही अस्त-व्यस्त हो जायेगा। यह सब उस समय और भी विचित्र प्रतीत होता है, जल नाट्यदर्पणकार स्वयं काव्यापहार की कटु शब्दों में करते हैं।[1]

काज़ी पाड़ा, बिजनौर (उ० प्र०)
२४६७०१

ग्रन्थ-सूची

१. नाट्यदर्पण (ना० द०)-रामचन्द्र-गुणचन्द्र, ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा, १९५९।

२. नाट्यशास्त्र (ना० शा०)·भरत, भाग—१। ओरियण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा, द्वितीय संस्करण १९५६।

३. नाट्यशास्त्र—भरत, भाग—२, ओरिएण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा, १९३४।

४. नाट्यशास्त्र—भरत, भाग—३, ओरिएण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा १९५४।

५. नाट्यशास्त्र—भरत, भाग—४, ओरिएण्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा १९६४।

६. हिन्दी नाट्यर्पण—रामचन्द्र-गुणचन्द्र, हिन्दी-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, प्रथम संस्करण १९६१।

७. दि नाट्यदर्पण ऑव रामचन्द्र एण्ड गुणचन्द्र—ए क्रिटिकल स्टडी—त्रिवेदी के० एच०, इन्स्टीट्यूट ऑव इण्डोलॉजी, अहमदाबाद, फर्स्ट एडीशन, १९६६।

---

१. अकवित्वं परस्तावत् कलङ्कः पाठशालिनाम्।
अन्यकाव्यैः कवित्वं तु कलङ्कस्यापि चूलिका॥ ना० द० प्रारम्भिक श्लोक सं० ११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org